अध्याय – 13
पशुधन का महत्त्व
(Importance of Livestock)

13.1. परिचय :

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की जनसंख्या का 70 प्रतिशत भाग गॉव में रहता है। यहाँ पर गायों, भैसों, भेड़, बकरी, ऊँट आदि जानवरों का पालन पोषण पीढियों से चला आ रहा है। पशुधन से मनुष्य का जीवन सीधा जुड़ा हुआ है। पशुओं को आदिकाल से ही कृषि कार्यों के लिए उपयोग में लिया जाता रहा है तथा इनको मानव आगे भी कृषि अथवा अन्य कार्यों में लेता रहेगा। पशुओं को खेती कार्य के लिए शक्ति का साधन मानते हैं तथा इनके गोबर एवं मूत्र से मृदा की उर्वरकता को बढावा मिलता है। पशुओं से प्राप्त होने वाले दूध को मानव ने अपने लिए एक सम्पूर्ण आहार के रूप में माना है। जिससे मनुष्य को सभी प्रकार के खनिज लवणों के साथ साथ ऊर्जा की पूर्ति होती है। पशुओं से दूध, माँस तथा अण्डे प्राप्त होते हैं जो मनुष्य की आवश्यक प्रोटीन के लिए जरूरी समझा गया है। प्रोटीन शरीर की एक संरचनात्मक इकाई मानी जाती है। देश तथा विदेशों में जहाँ फार्म कार्यों के लिए यान्त्रिकरण की बात आती है जिससे खेती के कार्य जल्दी तथा सुविधापूर्वक कर लिये जाते है, किन्तु मानव के भोजन की आवश्यकता को मध्य नजर रखते हुए जानवरों की रक्षा एवं सुरक्षा करना आवश्यक कार्य बन गया है। भारत में आज भी मध्यम तथा निम्न आय वर्ग वाला व्यक्ति गाँवों में रहता है तथा गॉव में रहकर पशुधन पालकर अपना रोजगार चलाता है। पशुधन का उपयोग कृषि कार्यों के साथ–साथ गोबर की खाद उपलब्ध होना तथा इनसे दूध, घी, दही, मट्ठा आदि (दूध से निर्मित पदार्थ) उपलब्ध होते हैं। जिनको बाजार में बेचा जा सकता है जो रोजगार का एक साधन माना गया है।

पशुधन का अर्थ भारत में गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट आदि पालतू जानवरों से लगाया जाता है। भारत की भौगोलिक स्थितियों के अनुसार पशुधन का पालन पोषण तथा वहाँ का खान–पान बदलता है। जैसा कि पश्चिमी राजस्थान में हमेशा गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि खाने के लिए काम में लिया जाता है तथा आसाम, पश्चिम बंगाल आदि जगहों पर अधिकतर चावल खाने के रूप में लिया जाता है। इसी तरह पशुधन भी भौगोलिक दृष्टि से अपनी महत्वता रखता है एवं पृथक कृषि जलवायु वाले क्षेत्रों में पृथक–पृथक प्रजाति एवं नस्ल के पशु उपयोगी होते हैं।

भारत में विश्व का लगभग 15 प्रतिशत पशुधन आज भी पाया जाता है जिनकी अलग–अलग राज्यों में स्थितियाँ अलग–अलग हो सकती है। पशु गणना वर्ष (2003)के अनुसार इनकी संख्या लगभग 4644.62 लाख आंकी गई है। इस पशुधन की राज्यवार स्थिति निम्न प्रकार है :

सारणी 13.1 राज्यवार पशुओं की संख्या (वर्ष 2003 के अनुसार)

क्र.सं.	राज्यों के नाम	पशुधन संख्या (लाखों में)
1.	हरियाणा	88.84
2.	मध्य प्रदेश	353.65
3.	छत्तीसगढ	134.87
4.	केरल	36.29
5.	तमिलनाडु	341.26
6.	महाराष्ट्र	357.70
7.	राजस्थान	491.36
8.	पंजाब	86.08
9.	उड़ीसा	234.10
10.	कर्नाटक	256.21
11.	झारखण्ड	154.78
12.	आसाम	134.31
13.	गुजरात	211.68
14.	पश्चिम बंगाल	416.18
15.	उत्तराखण्ड	49.43
16.	उत्तर प्रदेश	578.69
17.	जम्मू–कश्मीर	103.45
18.	हिमाचल प्रदेश	51.83

देश की अर्थव्यवस्था में पशुपालन की सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पशुओं से हमें दूध एवं माँस के रूप में पोषक तत्त्व मिलते हैं वहीं गोबर को खाद व ईंधन के रूप में उपयोग में लिया जाता है। पशुधन के मरने के बाद भी उसका चमड़ा बाल, खुर, हड्डियाँ, सींग आदि अनेकों काम आती हैं।

13.2. महत्त्व :

1. **दूध** : दूध को सम्पूर्ण आहार माना गया है जिससे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, वसा तथा खनिज लवण मिलते हैं तथा दूध एक ऐसा पदार्थ है जो गाय, भैस, भेड़ व

बकरी से ही प्राप्त किया जाता है। अधिकतर जनसंख्या गाँवों में रहने के कारण गाँवों में दूध को बेचना एक रोजगार का साधन भी बना लिया गया है। भारत में प्रतिदिन 10334.0 लाख लीटर दूध पशुधन से प्राप्त होता है तथा प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दूध उपलब्धता 217 ग्राम है जो कि आवश्यता से कम है। दूध बच्चों, बूढ़ों व बीमार व्यक्तियों के लिए आवश्यक आहार है। इससे मनुष्य को प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट्स तथा खनिज लवण प्राप्त होते हैं। इस तरह पशुधन से प्राप्त दूध हमारे लिए जीवनोपयोगी है।

2. **माँस** : पशुधन से प्राप्त दूसरा खाद्य पदार्थ जो सामान्य रूप से मुर्गा, मुर्गी, बकरा, बकरी, भेड़, सुअर से बहुतायत में प्राप्त किया जाता है। यह पशु प्रोटीन का महत्वपूर्ण आहार माना गया है। जिससे पशुओं में उपलब्ध प्रोटीन मनुष्य को खाने के लिए सीधा उपलब्ध होता है। इससे वसा, कार्बोहाइड्रेट्स तथा अन्य खनिज लवण भी आवश्यकता से अधिक मिलते है।

3. **खाद** : जानवरों के गोबर, मूत्रजन की खाद प्रतिवर्ष तैयार की जाती है। जिसकी उपयोगिता मृदा की उर्वरक क्षमता को बनाये रखने के लिए आवश्यक है। एक जानवर से वर्षभर में लगभग 50–55 क्विंटल गोबर की खाद तथा 1.8–2.0 क्विंटल नत्रजन खाद मिलती है जो भूमि की उर्वरा शक्ति के लिए उपयोगी होती है।

4. **कृषि** : भारत की खेती आदि काल से ही बैलों, ऊँट एवं भैसों के द्वारा होती आई है। खेत को जोतने से लेकर अनाज तथा चारा ढुलाई तक जानवरों को फार्म पावर के रूप में काम लिया जाता है। इसमें प्रमुख कार्य खेत की जुताई करना, फसल की बुआई करना, सिंचाई करना तथा माल को इधर–उधर लाना ले जाना पशुओं के माध्यम से किया जाता है।

5. **यातायात के साधन** : पशुओं को आदिकाल से ही यातायात के काम में लिया जाता रहा है। राजस्थान के थार के रेगिस्तान में यातायात का मुख्य साधन ऊँट माना गया है। जिसके पैर गद्देदार होने के कारण रेगिस्तान में चलना आसान हो जाता है। विभिन्न कृषि कार्यों के साथ–साथ सवारियों को ले जाने तथा लाने का कार्य पशुधन जैसे तांगा, ऊँटगाड़ी आदि से किया जाता है। जिससे प्रतिवर्ष लगभग रू. 5000 से 8000 मिलियन आय का अनुमान लगाया गया है।

6. **चमड़ा** : पशुओं के चमड़े से अनेकों तरह के सामान जैसे–जूते, चप्पल, बैग आदि, निर्मित की जाती है। विश्व का सबसे ज्यादा पशुधन भारत में होने के कारण चमड़े की 20 प्रतिशत आवश्यकता भारत से पूरी होती है। जो आर्थिक आय का लगभग 2.5 प्रतिशत से 3 प्रतिशत तक रहता है। हड्डियों, सींगों तथा पशुधन के खुरों को भी उसके मरने के बाद काम मे लिया जाता है जिससे लगभग पशुधन से प्राप्त आय का 0.1 प्रतिशत होता है।

पशुधन का भारत की अर्थ व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान है। जिस देश में पशुधन का उत्पादन अच्छा रहता है वहाँ की अर्थव्यवस्था भी सुदृढ होती है। वहीं पर पशुधन से प्राप्त गोबर तथा नत्रजन मृदा की उर्वरकता को बनाए रखने में उपयोगी सिद्ध होता है। उर्वरक क्षमता बढ़ने से अन्न की पैदावार बढती है। इसका अर्थ यह है कि कृषि भी परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से पशुधन से जुड़ी हुई रहती है। अतः पशुधन का आर्थिक महत्व हमारे जीवन में अधिक है।

13.3. भारत में श्वेतक्रान्ति (White Revolution in India) :

भारत आज विश्व में दूध उत्पादन में सर्वोच्च स्थान पर है। जिसका श्रेय श्वेत क्रान्ति तथा उसके जनक डॉ. कुरियन को जाता है। भारत में श्वेतक्रान्ति के माध्यम से किसानों को अपने विकास के लिए सीधा लाभ पहुँचाने, उनको उनके उत्पाद का पूरा–पूरा पैसा देने तथा कम कीमत पर ग्राहक तक दूध के वितरण की अच्छी व्यवस्था हो, इसके लिए केन्द्र सरकार द्वारा तथा राज्य सरकारों ने मिलकर सोसायटियों का निर्माण किया गया जिसमें ग्राहक तथा उत्पादक दोनों की समस्याओं का निराकरण करते हुए, राष्ट्रीय दूध ग्रीड को सम्पूर्ण भारत में किसानों से जोड़ दिया गया। इसके साथ–साथ ब्लॉक लेवल तक ग्राहकों को भी इससे जोड़ने का प्रयास चल रहा है। जिससे राष्ट्रीय डेयरी फेडरेशन का लाभ जन–जन तक पहुँच सके। तथा उपभोक्ता व उत्पादक के मध्य मूल्य निर्धारण की समस्या नहीं रहे तथा उत्पादक इसका सबसे बड़ा लाभान्वित सदस्य हो, इसके पीछे यही सबसे बड़ी धारणा थी।

श्वेतक्रान्ति के मुख्य उद्देश्य किसानों को अच्छा प्रबन्धकीय ज्ञान तथा तकनीकी से अधिकतम लाभ पहुँचाना है। इसके उद्देश्य इस तरह रखे गये है : (1) दूध के उत्पादन को

बढाया जाना (2) ग्रामीण क्षेत्रों की आय को बढ़ाया जाना (3) ग्राहकों को कम कीमत पर अच्छा दूध उपलब्ध कराना। श्वेतक्रान्ति आपरेशन को अलग–अलग चरणों में लागू किया गया है।

प्रथम चरण : इस चरण के अन्तर्गत दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता तथा चैन्नई में मदर डेयरी संगठनों की स्थापना कर शुरू किया गया। यह चरण 1970–1980 के मध्य में चलाया गया। इसके अन्तर्गत यूरोपीय संघ ने दूध पाउडर तथा बटर आयल को निःशुल्क जन–जन तक पहुँचाने का कार्य स्कूलों के माध्यम से किया गया। इस कार्य को यूरोपीय संघ, यूरोपीय आर्थिक सोसायटी तथा विश्व खाद्य संगठन के सहयोग से चलाया गया था। चारों मेट्रोपोलिटन शहरों के साथ–साथ यह कार्यक्रम 18 अन्य शहरों मे भी जोड़ा गया। इस चरण में लगभग 116 करोड़ रूपये की लागत आयी थी जो मुख्य रूप से डेयरी उद्योगों को बढ़ावा देने के उद्देश्यों से चलाया गया था। इसको चलाये जाने का मुख्य उद्देश्य छोटे किसानों एवं गरीब तबकों को बडे लोगों के कर्ज से मुक्त करवाना तथा डेयरी पशुधन को बढ़ावा देकर, दूध उत्पादन बढाया जाना था।

द्वितीय चरण (Second Phase) : इस चरण को 1980 से 1985 तक चलाया गया। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में डेयरी विकास को बढ़ावा देकर गाँवों में डेयरी चलाये जाने की सुविधाओं को उपलब्ध करवाया जाना था। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की आय में वृद्वि हो सके। इस योजना के अर्न्तगत 1985 तक 43000 गाँवों मे करीब 42.20 लाख दूध उत्पादकों को इससे जोड़ा गया था। इससे दूध उत्पादन तथा दूध निर्मित उत्पादन 1985–1989 में 22000 टन से बढ़कर 140000 टन पहुँच गया। इस प्रकार दूध उत्पादन तथा दूध पाउडर के उत्पादन में वृद्वि विश्व बैंक तथा यूरोपीय संघ द्वारा आर्थिक मदद उपलब्ध करवाने पर ही सम्भव हो पायी थी।

तृतीय चरण (Third Phase) : इस चरण का कार्यकाल 1985 से 1996 तक 11 वर्ष का रहा था। इसमें प्राथमिक व्यक्तियों को पशुधन के बारे में प्रशिक्षण दिया जाना तथा उनको कृत्रिम गर्भाधान से दूध का उत्पादन किस तरह बढ़ाया जा सकता है इस बारे में आवश्यक प्रशिक्षण देकर तैयार किया गया। इसके साथ–साथ पशुधन के प्रबन्धन एवं आहार सम्बन्धी जानकारियाँ भी प्रशिक्षकों के माध्यम से पशुपालकों तक पहुँचाने का कार्य किया गया। जिससे दूध उत्पादन को बल मिला। पहले चरण में इन डेयरी संस्थाओं की संख्या मात्र 173 थी जो दूसरे चरण में बढ़कर 42000 तथा तीसरे चरण में 72000 के लगभग पहुँच गयी। जिसमें मुख्य भूमिका स्त्रियों की रही।

इसको ओर अधिक बढ़ावा देने के लिए सरकार को पशुधन अनुसंधान तथा स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे दूध उत्पादन को बढावा मिलेगा।

सारांश

पशुधन का अर्थ पालतू जानवरों से है जिनको पालकर किसान आर्थिक लाभ कमा सकता है तथा उसको कृषि कार्यों के लिए उपयोग में लेता है। विश्व के कुल पशुधन का 15 प्रतिशत भारत में पाया जाता है। पशुधन से मनुष्य को दूध, माँस, खाद आदि प्राप्त होता है। कृषि आधारित आय का लगभग 40 प्रतिशत भाग पशुधन से प्राप्त होता है। भारत में श्वेत क्रान्ति के माध्यम से गाँवों में दूध से आय बढ़ाया जाना तथा ग्राहकों को कम कीमत पर अच्छा दूध उपलब्ध करवाया जाना मुख्य उद्देश्य है।

प्रश्न :

1. विश्व के कुल पशुधन का भाग भारत में पाया जाता है :
   (अ) 10 प्रतिशत (ब) 20 प्रतिशत
   (स) 15 प्रतिशत (द) 5 प्रतिशत
2. पशुधन से कृषि की आय का कुल हिस्सा है :
   (अ) 20 प्रतिशत (ब) 40 प्रतिशत
   (स) 50 प्रतिशत (द) 25 प्रतिशत
3. ऊँट रेगिस्तान में चल सकता है क्योंकि :
   (अ) इसके पैर गद्दे नुमा होता है
   (ब) पैर चौड़े होते हैं।
   (स) पैर नुकीले होते हैं।
   (द) उपरोक्त सभी।
4. पशुधन का कृषि में महत्त्व की विवेचना कीजिए।
5. पशुओं के आर्थिक महत्त्व का वर्णन कीजिए।
6. श्वेत क्रान्ति से आप क्या समझते हैं, वर्णन कीजिए।